Roll No. : ..... Total Pages : 5

2641-R

Second Year Art (Regular) Examination, 2016

SANSKRIT

Paper – I

(नाटक, छन्द एवं अलंकार)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

खण्ड-अ [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-ब [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-स [Marks : 30]

कोई दो प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(इकाई–I)

(i) आश्रम में प्रवेश के समय दुष्यन्त आभूषण क्यों उतार देते हैं?

(ii) राज्य से दुष्यन्त के लिए अम्बा ने किसके हाथ संदेश भेजा था?

(इकाई–II)

(iii) 'परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे मे' बहुपत्नीक होते हुए भी राजा दुष्यन्त के जीवन में किन दो की प्रतिष्ठा है?

(iv) शकुन्तला के गर्भिणी होने के वृत्तान्त की सूचना में शकुन्तला की तुलना किससे की गयी है?

(इकाई–III)

(v) राजा दुष्यन्त की शकुन्तला के अतिरिक्त अन्य दो रानियों के नाम लिखिए।

(vi) राजा को अँगूठी की पुनः प्राप्ति कैसे हुई?

(इकाई–IV)

(vii) इन्द्रवज्रा छंद का लक्षण लिखिए।

(viii) मन्दाक्रान्ता छंद में कितने-कितने वर्गों पर यति होती है?

(इकाई–V)

(ix) अनुप्रास अलंकार का लक्षण लिखिए।

(x) उपमान व उपमेय में अभेद आरोप जहाँ होता है, उस अलंकार का नाम लिखिए।

खण्ड-ब

(इकाई–I)

निम्नलिखित पद्य की सप्रसंग **संस्कृत** में व्याख्या कीजिए :

2. सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

अथवा

3. न नमयितुमधिज्यमस्मि शक्तो
धनुरिदमाहितसायकं मृगेषु।
सहवसतिमुपेत्य यैः प्रियायाः
कृत इव मुग्धविलोकितोपदेशः।।

(इकाई–II)

निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग **संस्कृत** में व्याख्या कीजिए :

4. इदमनन्यपरायण मन्यथा हृदयसंनिहिते ! हृदयं मम।
यदि समर्थयसेमदिरेक्षणे ! मदनबाणहतोऽस्मि हतः पुनः।।

अथवा

5. विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।।

(इकाई–III)

निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

6. भवन्ति नम्रास्तरव: फलोद्गमै-
नंवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घना:।
अनुद्धता: सत्पुरुषा: समृद्धिभि:
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

अथवा

7. सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वीप यन्नियोज्या:
संभावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम्।
किं वाऽभविष्दिरूणस्तमसां विभेत्ता
तं चेत् सहस्त्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्।।

(इकाई–IV)

8. निम्नलिखित छंदों में से किन्हीं **दो** के मात्रा तथा गण परिगणना सहित लक्षण और उदाहरण दीजिए :

(क) वसन्ततिलका।

(ख) शिखरणी।

(ग) उपजाति।

(घ) वंशस्थ।

(इकाई–V)

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अलंकारों के लक्षण व उदाहरण लिखिए :

(क) उपमा।

(ख) अर्थान्तरन्यास।

(ग) दीपक।

(घ) उत्प्रेक्षा।

खण्ड-स

10. कोई **दो** प्रश्न कीजिए। किसी भी प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।

(क) दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ख) नाट्यशास्त्रीय नियम के आधार पर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की समीक्षा कीजिए।

(ग) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में वर्णित 'प्रकृति-चित्रण' पर लेख लिखिए।

(घ) छंदशास्त्र का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए 'स्रग्धरा' छंद के लक्षण, उदाहरण व गणों की परिगणना करते हुए स्पष्ट कीजिए।

(ङ) शब्दालंकारों की लक्षण व उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।